हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट–VI (प्रश्नपत्र–2)

DTVF/18(JS)–HL-**HL6**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 06 07/08/2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

0	8	6	0	5	2	0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) जी जै न ठाँउ न आपन गाँउ, सुरालयहू को न संबल मेरे।
नाम रटो, जमवास क्यों जाउँ, को आइ सकै जम-किंकर नेरे।
तुम्हरो सब भाँति, तुम्हारिय सौं, तुम्ही, बलि हौ मोकों ठाहरु हेरे।
बैरष बाँह बसाइए पै, 'तुलसी' घरु व्याध अजामिल खेरे।।

सगुण भक्ति परंपरा में जहाँ सूरदास सख्य भक्ति भाव धारण करते हैं वहीं मर्यादापुरुषोत्तम राम के भक्त 'तुलसीदास' दैन्यभाव को ही भक्ति का एकमात्र मार्ग मानते हैं और 'कवितावली' के 'उत्तरकाण्ड' में अपने ईश्वर की वन्दना करते हुए कहते हैं –

कि मैं तो पूरी तरह भगवान राम को समर्पित हूँ। मैं तो भगवान राम का नाम रटकर स्वर्ग को जाऊँगा, किस यम की हिम्मत है कि मुझे नरक लेकर जाए।

हे ईश्वर मैं तो मनसा, वाचा, कर्मणा हर प्रकार से तुम्हें समर्पित हूँ। हे प्रभु- मुझे अपने हृदय में उसी प्रकार स्थान दो जिस प्रकार आपने व्याध (नीच) अजामिल को देकर कृतार्थ किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

काव्य सौन्दर्य

भाषा- ब्रजभाषा
रस - भक्ति
अलंकार : अनुप्रास, ध्वन्यर्थ व्यंजना, दृष्टान्त
छंद - सवैया

विशेष

1. भक्त अजामिल की कथा के दृष्टान्त का सुन्दर प्रयोग

2. दैन्य भाव में भक्त अपने आप को न्यूनतम स्थिति में रखकर प्रस्तावित करता है ऐसा ही भाव यहाँ # दिखता है।

3.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) आइ न सकौं तुझ पैं, सकूँ न तुझ बुझाइ।

जियरा यौंही लेहुगे, बिरह तपाइ तपाइ।।

~~विरह~~ ईश्वर मिलन की तड़प व विरह का भाव 'कबीरदास' के काव्य का प्रमुख विषय है। प्रस्तुत साखी जो 'श्यामसुंदर दास' द्वारा संकलित 'कबीर ग्रंथावली' के विरह को अंग से उद्धृत है, में ऐसा ही भाव प्रस्तुत है।

कबीर अपने निर्गुण राम को पुकारते हुए कहते हैं कि हे प्रभु आप मेरी विरह की अग्नि को बुझाने नहीं आ रहे और मैं भी आप तक न तो पहुँच पा रहा और न ही आपके विरह से पार पा रहा।

इसी विरहाग्नि में मेरे प्राण जलकर भस्म होना निश्चित है।

सौन्दर्य : भाषा- सधुक्कड़ी (पँचमेली खिचड़ी)

अलंकार - सांगरूपक, अनुप्रास, पुनरोक्ति - प्रकाश।

रस- वियोग श्रृंगार

छन्द - साखी (दोहा)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

1. विरह के भाव को प्रधानता देते हुए अन्यत्र कबीर ने विरह को सुल्तान (राजा) की उपाधि भी दी है -
'बिरहा बुरहा न कहो, बिरहा है सुल्तान'

2. 'यौं ही' में ब्रजभाषा का प्रभाव दिखता है।

3. कबीर ने भक्तिमार्ग में योगमार्ग की कठिन साधना को मिश्रित किया और कठिन विरह की अनुभूति की जो यहाँ रचित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) पिउ बियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा तस बोलै पिउ पीऊ।
अधिक काम दगधै सो रामा। हरि जिउ लै सो गएउ पिय नामा।
बिरह बान तस लाग न डोली। रकत पसीचि भीजि तन चोली।
सखि हिय हेरि हार मैन मारी। हहरि परान तजै अब नारी।
खिन एक आव पेट महँ स्वाँसा। खिनहि जाइ सब होइ निरासा।
पौनु डोलावहिं सींचहिं चोला। पहरक समुझि नारि मुख बोला।
प्रान पयान होत केइँ राखा। को मिलाव चात्रिक कै भाखा।
आह जो मारी बिरह की आगि उठी तेहि हाँक।
हंस जो रहा सरीर महँ पाँख जरे तन थाक।।

प्रस्तुत पद्यावतरण 'अवधी के अश्घान' मलिक मुहम्मद जायसी के प्रसिद्ध स्तम्भ पद्मावत' के 'नागमती बियोग खण्ड' से उद्धृत है।

रत्नसेन के लंका जाने के बाद नागमती बियोग की मार्मिक व्यंजना पंक्तियों में की गई है।

नागमती कहती है प्रिय के बियोग में उसका हृदय पपीहे की तरह पागल हो पिय-पिय की रट लगाए रहता है। बिरह के कारण पसीने में भी रक्त की बूंदें आने लगी हैं जिससे सारे वस्त्र भीग गए है।

एक क्षण तो पेट में स्वास आती है जो प्रिय के आने का आभास कराती है परन्तु अगले

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हीं क्षण जब तक स्वाँस चली जाती है तो फिर निराशा होने लगती है।

इस प्रकार नागमती का शरीर रूपी हँस विरह रूपी अग्नि से जल गया है।

सौन्दर्य: भाषा - ठेठ अवधी
रस - वियोग शृंगार
अलंकार - उपमा, रूपक
छंद - कड़वक बद्ध शैली में चौपाई व दोहा

विशेष

1. यहाँ नागमती के विरह का अद्भुत साधारणीकरण हुआ है क्योंकि नागमती का 'नारीपन' उभरा है 'रानीपन' नहीं। इसीलिए आचार्य शुक्ल ने इसे 'हिन्दी साहित्य की अमूल्य वस्तु' कहा गया है।

2. प्रकृति भी व्यक्ति के स्वभावानुसार व भावनानुसार लगने लगती है - इस सहज मनोविज्ञान का सुन्दर प्रयोग दिखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

अज्ञेय की निरीश्वरवाद से 'ईश्वरवाद' की यात्रा में 'सृजन शक्ति का आह्वान' व 'सृजन की अर्हता' का ~~संप्रेषण~~ संप्रेषण 'असाध्यवीणा' के माध्यम से हुआ है। ~~सृ~~ इसी सृजन की अर्हता का रहस्य व्याख्येय पंक्तियों में खुलता है।

राजा के सब जाने माने संगीतकार वीणा को साधने में असफल रहे क्योंकि वे बाह्य साधनों से दंभ व गर्व से वीणा को साधने का प्रयास कर रहे थे।

राजा को वीणा के न सधने का कारण तो ज्ञात नहीं परन्तु उसे विश्वास अवश्य है कि ~~वज्र~~ वज्रकीर्ति की साधना व्यर्थ नहीं जाएगी, कोई न कोई साधक जरूर वीणा के रहस्य को सुलझाएगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सौन्दर्य

भाषा - तद्भव प्रधान खड़ी बोली
अलंकार - अन्योक्ति , अनुप्रास
रस - शान्त

विशेष

1. आगे जब प्रियंवद सृजन की अर्हता को पूर्ण कर स्वयं को सृजन-शक्ति व परंपरा को सौंप देता है तो वीणा झनझना उठती है - " सहसा वीणा झनझना उठी "

2. जैन बुद्धवाद व सृजनात्मक रहस्यवाद का स्पष्ट प्रभाव लक्षित हो रहा है।

3)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) धर्म का है एक और रहस्य भी,
अब छिपाऊँ क्यों भविष्यत् से उसे?
दो दिनों तक मैं मरण के भाल पर
हूँ खड़ा, पर जा रहा हूँ विश्व से।
व्यक्ति का है धर्म तप, करुणा, क्षमा,
व्यक्ति की शोभा विनय भी त्याग भी,
किन्तु, उठता प्रश्न जब समुदाय का,
भूलना पड़ता हमें तप-त्याग को।

रामधारी सिंह दिनकर की कविता अलौकिक' के सम्मुख 'लौकिक' व आदर्श के सम्मुख व्यवहारवाद' व 'मानवतावाद' की स्थापना की कविता है। ~~और~~

यहाँ भीष्म -युधिष्ठिर संवाद के माध्यम से मानवजीवन के लक्ष्य तय किये गए हैं।

भीष्म कहते हैं कि धर्म ~~क~~ के भी मानवीय उद्देश्य हैं, वह महज एक आदर्शवादी चोला नहीं है।

व्यक्ति का धर्म है कि वह सामान्य परिस्थिति-यों में विनय, त्याग, करुणा, क्षमा आदि गुणों को धारण करे।

परन्तु जब यही गुण समाज के लिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अहितकारी हो व्यक्ति को निष्क्रिय करने लगे और जब समाज के हित का प्रश्न हो तब तप-त्याग को छोड़ युद्ध अपनाना भी अधर्म नहीं है।

सौन्दर्य : भाषा : तत्समप्रधान खड़ी बोली

~~अलंकार~~

शब्द शक्ति - अभिधा

रस - शान्त

विशेष: 1. मार्क्सवाद का प्रभाव स्पष्ट दिख रहा है।

2. 'व्यक्तिवाद' पर समाजवाद की 'स्थापना'

3. अन्यत्र दिनकर लिखते हैं -

" चाहता कोई नहीं, इसको मगर
रोग लेकिन आ गया जब पास हो।
तिक्त औषधि के सिवा उपचार क्या,
शमित होगा यह नहीं मिष्ठान्न से।"

यहाँ भी युद्ध की आवश्यक स्थितियों की चर्चा की गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'असाध्य वीणा 'मौन से स्वर' और 'स्वर से मौन' की यात्रा है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में असाध्य वीणा की अंतर्वस्तु का विश्लेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. (क) व्यक्ति और समाज के संबंध को लेकर अज्ञेय के क्या विचार हैं? 'असाध्य वीणा' कविता के आधार पर बताइये। 20

अज्ञेय का रचनाकर्म वैचारिक उत्कृष्टता व सूक्ष्मता का अन्यतम प्रमाण है। वे प्रत्येक रचना में अपने वैचारिक व्यक्तित्व का कुछ न कुछ सँप्रेषित ही करना चाहते हैं।

'असाध्य-वीणा' कविता में भी उन्होंने गहन स्तर पर 'सृजन की प्रक्रिया' 'सृजन की अर्हता' व 'परंपरा के महत्व' को लेकर प्रतिपादित किया है और अपनी काव्यदृष्टि भी व्यंजित की है, परन्तु वे यहीं तक नहीं रुके और अगले स्तर पर व्यक्ति और समाज के विषय में अपना सूक्ष्म चिंतन प्रेषित करते हैं।

अज्ञेय मुख्यतः 'व्यक्तिवादी' माने जाते हैं जो व्यक्ति को समाज से तो नहीं पर समाज में स्वतन्त्र मानते हैं वे 'नदी के द्वीप' में लिखते हैं -

"हम नदी के द्वीप हैं
वह हमें आकार देती है
किन्तु हम बहेंगे नहीं, क्योंकि बहना

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रेत होना है
और हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।

इसी विचार की भाँति अज्ञेय असाध्यवीणा में भी वीणा के झनझना उठने प्रभाव स्पष्ट करते हैं, वीणा के संगीत का प्रभाव पड़ता तो पूरे समाज पर एक साथ है परन्तु प्रत्येक व्यक्ति के अपने स्वधर्म के अनुसार।

"राजा ने अलग सुना" और "रानी ने अलग" किसी को 'बटुली के अन्न की खुदबुद' का अहसास होता है तो किसी को 'नई बहू की सहमी सी पायल ध्वनि' का और यहीं वे समाज में व्यक्ति की अद्वितीय स्थिति को प्रस्तावित करते हुए 'युग पलट गया' की घोषणा करते है सब 'डूबते तो एक साथ हैं', पर 'पार अलग-अलग एकाकी ही तिरते हैं'।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूसरे स्तर पर वे व्यक्ति के व्यक्तित्व को परंपरा की देन ही मानते हैं प्रियंवद की साधना प्रक्रिया के माध्यम से वे जिस परंपरा के महत्व की स्थापना करते हैं। वह एक तरह से समाज के महत्व की ही प्रस्तावना है जिसका महत्व किसी एक व्यक्ति से अधिक है–

"कौन प्रियंवद है कि दंभ कर
इस अभिमंत्रित कारुवाद्य के सम्मुख आवे
कौन बजाते यह वीणा
जो स्वयं एक जीवन भर की
साधना रही"

अतः व्यक्ति का समाज से अलग अस्तित्व 'व्यक्तित्वहीनता' की ही स्थिति है

इस प्रकार असाध्यवीणा में अन्य अर्थों की तरह एक प्रस्तावना व्यक्ति व समाज के संबंधों की भी है जो 'प्रगतिवादी यांत्रिकता' व छायावादी वैयक्तिकता' दोनों का ही निषेध है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

नागार्जुन घोषित रूप से ~~लिए~~ जनता के लिए ही रचना करते हैं। वे स्पष्ट लिखते हैं-

" जन-कवि हूँ मैं साफ कहूँगा, क्यों हकलाऊँ"

और इसी क्रम में वे आम जन की भावनाओं समस्याओं व सामान्य जनजीवन की अभिव्यक्ति करते हैं।

चाहे बस कंडक्टर द्वारा बेटी के लिए ली गई "हरी चूड़ियाँ" हों या फिर गार्हस्थिक प्रेम का "सिंदूर तिलकित भाल" उनकी कविता में जनसाधारण की सहज भावनाओं का ही चित्रण है।

वे इन भावनाओं की उपेक्षा करने वाली राजनीति को सीधे-सीधे चुनौती देते हैं व व्यंग्य करते हैं-

" हरिजन गिरिजन दोनों मरते, हम डोलें वन वन में"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुम रेशम की साड़ी डारे उड़ती फिरो गगन में"

वहीं प्रकृति का भी वही रूप दिखाते हैं जो जनसुलभ है ~~स्पष्ट~~ चाहे 'हरा ठिगना चना हो', 'काली कुतिया हो' या 'मादा सुअर'।

जनता की समस्याओं के प्रति उनकी कविता हमेशा प्रतिबद्ध रही है। वे

" क्या है दक्षिण, क्या है वाम
जनता को रोटी से काम"

की घोषणा करके भूख की समस्या को उठाते हैं वहीं 'हरिजन गाथा' के माध्यम से समाज के निचले वर्ग के शोषण को स्पष्ट करते हैं। वे जनता की समस्याओं को न सुलझा पाने वाली आजादी पर भी तमाचा लगाते हुए उसे कागज की आजादी बताते हैं।

इसी साधारण के प्रति प्रतिबद्धता का स्तर उनकी सर्वजन ग्राह्य भाषा व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अभिधा शैली से स्पष्ट होता है।

परन्तु आमजन के प्रतिबद्धता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा नहीं है। वे यांत्रिक विचारधारा से परे उदात्त व विशिष्ट को सर्वजन ग्राह्य बनाना चाहते हैं न कि उससे दूरी। इसलिए वे हिमालय के सौन्दर्य का वस्तुगत चित्रण करते हैं काल्पनिक नहीं।

"कहाँ गया धनपति कुबेर वह कहाँ गयी
वह उसकी अलका
नहीं ठिकाना कालिदास के व्योमप्रवाही
गंगाजल का'

वस्तुतः नागार्जुन अपना जनकवित्व स्थापित करते हुए साधारण और उदात्त सबका साधारणीकरण करना चाहते हैं उदात्त की नहीं बल्कि 'उदात्तीकरण' की अपेक्षा करते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुकः facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'ब्रह्मराक्षस' कविता की बिंब-योजना के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 15

'बिंब' फिलॉट द्वारा प्रस्तावित आधुनिक काव्यशास्त्रीय धारणा है जो अमूर्त से अमूर्त विषय को पाठक के इन्द्रिय-बोध का हिस्सा बनाकर ~~कथ्य को~~ ग्राह्य बना देता है।

आधुनिक कवि बिम्ब को काव्य का आवश्यक अंग मानते हैं जिनमें 'निराला' व मुक्तिबोध प्रमुख हैं।

मुक्तिबोध ने तो स्वयं अपनी कविता को 'बिंबो का नगर' कहा है और लिखा है

" मेरी ये कविताएँ
भयानक हिडिंबा हैं
विकृताकृत बिम्बा हैं"

ब्रह्मराक्षस भी इसी परंपरा का भाग है। मुक्तिबोध मुख्यत: भयानक बिंबों की सर्जना करते हैं -

" खंडहर की तरफ
परित्यक्त सूनी बावड़ी"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे अपने फैंटेसी शिल्प के अनुसार आंतरिक विश्लेषणों को मूर्त रूप देते हैं

" खूब ऊँचा एक जीना साँवला
उसकी अँधेरी सीढ़ियाँ
वे एक आभ्यान्तर निराले लोक की"

वे दृश्य बिंबों तक ही सीमित नहीं रहते श्रव्य बिंबों का भी संश्लेषण करते हैं:-

" हाथ के पंजे बराबर
बाँह छाती मुँह छपाछप "
या
" शुद्ध संस्कृत गालियों का ज्वार"

वे मुख्यतः आंतरिक विषयों के कवि हैं इसलिए मुक्तिबोध की कविता में 'उपलक्षित' बिंबों की अधिकता दिखती है जो अमूर्त विषयों को मूर्त करने में सक्षम होती है।

इस प्रकार ब्रह्मराक्षस में भी मुक्तिबोध की बिंबधर्मिता उत्कृष्ट होकर उभरी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) करते हुए उसके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) यह पंच नहीं हैं, राच्छस हैं, पक्के राच्छस। यह सब हमारी जगह-जमीन छीनकर माल मारना चाहते हैं। डांड तो बहाना है। समझाती जाती हूँ, पर तुम्हारी आंखें नहीं खुलतीं। तुम इन पिसाचों से दया की आसा रखते हो, सोचते हो, दस-पाँच मन निकालकर तुम्हें दे देंगे। मुंह धो रखो।

"'प्रेमचन्द' का रचनाकर्म समस्त सामाजिक विद्रूपताओं को नग्न रूप में उघाड़ता है। 'गोदान' में 'धनिया' के वक्तव्य के माध्यम से उ बिरादरी पँचायत द्वारा समर्थित शोषण को प्रस्तुत किया गया है।

धनिया पंचों द्वारा गोबर व झुनिया की शादी पर लगाए गए दंड पर आक्रोशित होकर कहती है कि ये पंच व्यवस्था लोगों के शोषण का निमित्त मात्र है। दंड के माध्यम से गरीबों को दबाकर रखने का बहाना है। वह होरी को फटकारती है और कहती है कि इनसे किसी प्रकार की भलाई की आशा न रखो।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष: 1. 'गोदान' को प्रेमचन्द के रचनाकर्म का सर्वोत्कृष्ट रूप माना गया है जहाँ प्रत्येक सामाजिक बुराई, आदर्शवादी यथार्थवाद का चोला उतारकर नग्न रूप में खड़ी है। फिर चाहे वह 'मरजाद' हो या बिरादरी, ध्यातव्य रहे कि यह उस आदर्शवाद से सम्पूर्ण विचलन है जहाँ 'पंच' को 'परमेश्वर' की संज्ञा दी जाती थी।

2. धनिया का आक्रामक स्वभाव स्पष्ट हुआ है।

3. भाषा सहज, ग्राम्य व बोधगम्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

'दिव्या' के माध्यम से 'यशपाल' वर्तमान जीवन की समस्याओं का अनावरण करना चाहते हैं। ऐसा ही प्रयास यहाँ धर्म के 'अलौकिकवादी' व 'दुखप्रधान' स्वरूप को उजागर कर 'इहलौकिकता' स्थापित करने के लिए किया गया है।

लेखक बौद्ध धर्म का सिद्धान्त प्रतिपादित करते हुए कहता है कि इच्छा ही सब दुखों की जड़ है अतः इच्छाओं से निवृत्ति प्राप्त कर ही सुख को प्राप्त किया जा सकता है। अन्यथा सुख और दुख का क्रम तो चलता रहेगा।

विशेष: 1. यह विचार लेखक के अपने नहीं हैं, वे तो दिव्या के माध्यम से इन विचारों का खण्डन कर 'भौतिकवादी' दृष्टिकोण प्रतिपादित करना चाहते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. बौद्ध- दर्शन का प्रभाव
3. तत्सम प्रधान भाषा ऐतिहासिक आवरण को सघन कर रही है।
4. धर्म की निवृत्तिवादी मानसिकता का सुन्दर अनावरण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जमींदारी प्रथा खतम हो गई। अब जमींदार जमीन से बेदखल नहीं कर सकता। हमने उन्हें जमीन से बेदखल कर दिया। जो जोतेगा, जमीन उसकी है। जो जितना जोत सको, जिसकी जमीन मिले जोतो, बोओ, काटो। अब बाँटने का भी झंझट नहीं।... धरती माता का प्यार झूठा नहीं। फिर खेतों में जिंदगी झूमेगी। आषाढ़ के बादल बजा रहे हैं मादल, बिजली नाच रही है। तुम भी नाचो। ... नाचो रे! मादल बजाओ जोर-जोर से। पँचाय का नशा आज नहीं उतरेगा; जब तक पूर्णिमा का चाँद नहीं डूब जाए, घने बादलों में नाचना बंद नहीं होगा। चाँदनी की तरह प्रियतमा की मुस्कराहट, बाँसुरी-सी मीठी बोली तीर की तरह दिल पर घाव करती है।.. मेरे कलेजे पर फूलों से भरा हुआ सिर रख दो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

~~प्रश्न~~ व्याख्येय गद्यावतरण आँचलिक उपन्यास परंपरा के प्रणेता 'फणीश्वरनाथ रेणु' के उपन्यास 'मैला आँचल' से उद्धृत है। यहाँ आजादी के बाद जमींदारी प्रथा खत्म होने की सूचना प्रस्तुत की गई है।

आजादी के बाद नई सरकार द्वारा जमींदारी प्रथा खत्म कर दी गई और गाँव में उल्लास का वातावरण आ गया। उम्मीद जगी कि किसान को उसका हक मिलेगा और खेतों के माध्यम से खुशी का माहौल बनेगा।

लेखक इस खुशी में निर्विघ्न झूमना चाहता है और इसलिए अपने हृदय पर फूलों से भरे सिर को रखने की कामना करता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

1. प्रकृति का रोमानी चित्रण जो उपन्यास के मूल स्वभाव के विपरीत प्रतीत होता है
2. 'बाँसुरी सी मीठी बोली' में उपमा अलंकार
3. आजादी के उन स्वप्नों का रोमानी चित्रण हुआ है जो बाद में छिन्न-भिन्न हो गए।
4. तद्भव व तत्सम के मिश्रण से खड़ी बोली की मधुरता में वृद्धि हुई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) इसके बाद छोटे-छोटे दलों में बँटकर लोग आपस में बातचीत करने लगे। हाथों में क़ीमती गिलास थामे हुए कोई दल देश में बढ़ते भ्रष्टाचार पर चिंता कर रहा था, तो काई फैलती हुई अव्यवस्था पर। किसी के सोच और रोष का विषय था–देश का तेज़ी से गिरता हुआ नैतिक स्तर, तो किसी को दिन-ब-दिन बढ़ते हुए मूल्य परेशान कर रहे थे। रोगन-पॉलिश से चमकती हुईं, लक़दक़ कपड़ों में लिपटी स्त्रियाँ पुरुषों की हाँ में हाँ मिला रही थीं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'महाभोज' के माध्यम से 'मन्नू-भंडारी' ने समकालीन समाज व राजनीति की अवसरवादिता, स्थूल वैचारिकता तथा दोमुँही वैचारिकता को स्पष्ट किया है।

डी. आई. जी सिन्हा के प्रमोशन की पार्टी में उच्च वर्ग बातें तो नैतिक पतन व सामाजिक विषयों पर कर रहा है लेकिन उसी भ्रष्टाचार व अवसरवादिता के माध्यम से प्राप्त प्रमोशन का जश्न मना रहा है।

लोग शराब की चुस्कियाँ लेते हुए कहीं भ्रष्टाचार पर चिंता व्यक्त कर रहे हैं तो कहीं अनैतिकता पर।

स्वयं उसी भ्रष्टाचार से कमाए गए धन का उपभोग कर रहे हैं और अपनी चमक-दमक बनाए रख रहे हैं। किसी को वास्तव में आमजन से कोई मतलब नहीं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष: 1. ~~#~~ उच्चवर्ग पर तीक्ष्ण व्यंग्य किया गया है।

2. भाषा सहज हिन्दुस्तानी खड़ी बोली जो सर्वजन ग्राह्य है।

3. आजादी के बाद के मोहभंग की अभिव्यंजना की गई है।

प्रासंगिकता: आज भी राजनीति व अफसरशाही का यही स्वरूप देश के लिए चिंता का सबब बना हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश 'धर्मवीर भारती' की कहानी 'गुलकी बन्नो' से उद्धृत है। यहां गुलकी बन्नो का पति उसे लेने आया है और ले जाते समय उसके परिवार को गुलकी बन्नो की भविष्यत् स्थिति को स्पष्ट कर रहा है।

पति कहता है कि इसे ले जा रहा हूं पर पत्नी का कोई भी अधिकार नहीं होगा। गुलकी बन्नो को सिर्फ नौकरानी बनाकर रखा जाएगा और इस बहाने दो रोटी खाने को दे दी जाएगी।

अगर हक मांगने की कोशिश की तो हिंसा का सहारा भी लिया जाएगा।

विशेष: 1. ग्रामीण समाज में स्त्री की निम्न स्थिति का संप्रेषण किया गया है जहाँ आज भी स्त्री पूर्णतः अपने पति पर ही आश्रित है। उसका स्वयं का कोई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अस्तित्व नहीं।

2. घरेलू हिंसा की भयावहता को 'दृश्य' के माध्यम से व्यंजित किया गया है।

3. सहज, बोधगम्य भाषा का प्रयोग।

प्रासंगिकता : आज भी महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों में अधिकांश 'घरेलू हिंसा' का ही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'श्रद्धा-भक्ति' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध-शैली की विशिष्टताओं का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन है कि ~~कवियों~~ गद्य की कसौटी निबंध ही हैं क्योंकि निबंधों में ही रचनाकार की क्षमता बिना किसी साधन के स्पष्ट हो पाती हैं।

पुनः वे निबंधों में भी विचारात्मक निबंधों को श्रेष्ठ मानते हैं और 'विचारों की गूढ़ गुंफित परंपरा' को निबंध की श्रेष्ठता का प्रतिमान घोषित करते हुए कहते हैं कि उच्च निबंध वही है जहाँ "एक-एक पैरा में विचार दबा-दबाकर कसे गए हो"

श्रद्धा-भक्ति निबंध में आचार्य शुक्ल अपने वक्तव्यों को सार्थक करते प्रतीत होते हैं।

श्रद्धा भक्ति उनका मनोविकारपरक निबंध है जहाँ 'निगमनात्मक' शैली का प्रयोग किया गया है। आचार्य शुक्ल पहले सिद्धांत या सूत्र-कथन करते हैं यथा - "प्रेम स्वप्न है तो श्रद्धा जागरण' या फिर "प्रेम और

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

श्रद्धा का योग ही भक्ति है" और फिर इस कथन को स्पष्ट करते हैं।

पुनः आचार्य शुक्ल की मनोविकारपरक निबंध शैली ~~विशेष~~ में यूँ तो "यात्रा के लिए बुद्धि ही निकलती है" परन्तु जहाँ-जहाँ बुद्धि थकती है वहाँ हृदय का प्रयोग भी किया जाता है और ऐसा प्रभाव 'श्रद्धा-भक्ति' में स्पष्ट ~~दिख~~ दिखता है जहाँ प्रो. राममूर्ति के प्रसंग में हास्य-व्यंग्य की मनोदशा, परश्रद्धाकांक्षियों के संदर्भ में क्रोध की मनोदशा आदि स्पष्ट होकर उभरती है।

आचार्य शुक्ल साहित्य का उद्देश्य मनुष्य व समाज हित को मानते हैं इसलिए उनके काव्यशास्त्रीय निबंधों में जहाँ 'रस' वैयक्तिक से 'लोकमंगलवादी' हो जाता है वहीं श्रद्धा जैसे भावों की सामाजिक उपयुक्तता पर चिंतन दिखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे ~~श्र~~ श्रद्धा की सामाजिकता स्पष्ट करते हुए उसे श्रद्धेय का, शुभकर्मशील का मनोबल बढ़ाने का माध्यम सिद्ध करते हैं।

आचार्य शुक्ल की निबंध शैली में भाषा को लेकर यूँ तो 'तत्समता' का मोह अधिक दिखता है क्योंकि वैचारिक चिंतन के लिए यही भाषा सर्वोपयुक्त मानी गई है पर जहाँ- जहाँ कथ्य को स्पष्ट करने के लिए फारसी व देशज शब्दों के प्रयोग की आवश्यकता हुई वे हिचके नहीं यथा- गाड़ी हाँकना, 'आ-आ' करके विकल होना इत्यादि ।

आचार्य शुक्ल की निबंध शैली पर मनोविज्ञान के सिद्धान्तों यथा मैक्डूगल, स्पेंसर आदि का प्रभाव भी बताया जाता है ~~क~~ जो उनके द्वारा ~~प्रभा~~ प्रस्तावित परिभाषाओं में दिखता है परन्तु इससे अधिक नहीं। उनके साहित्य का लक्ष्य समाज है और वह उनकी निबंध -शैली में समग्रत:

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

स्पष्ट हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "पांडित्य और लालित्य का विलक्षण संयोग आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबंध-कला की अन्यतम विशेषता है।" इस कथन के संदर्भ में 'कुटज' निबंध का विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचना कर्म की श्रेष्ठता इस बात से तय होती है कि उसमें संश्लिष्टता किस हद तक मौजूद है चाहे वह वैयक्तिकता व सामाजिकता की हो, शब्द-शैली के कथ्यानुरूप चयन की हो या पांडित्य व लालित्य की।

जहाँ पाण्डित्य से तात्पर्य मनोविज्ञान, इतिहास, साहित्य, भाषा-विज्ञान आदि पर पकड़ से है वहीं लालित्य का तात्पर्य व्यक्तित्व व्यंजकता, विचारों की उन्मुक्त उड़ान, हास्य-व्यंग्य आदि भावों के सुगठित प्रयोग से।

आचार्य द्विवेदी के कुटज निबंध में दोनों विशेषताएँ संश्लिष्ट होकर उभरी हैं।

एक तरफ जहाँ 'कुटज' शब्द के अर्थ निर्धारण में वे भाषा-विज्ञान, संस्कृत साहित्य व धर्मग्रंथों का सहारा लेते हैं जैसे कुट का अर्थ दासी व घड़े से प्रस्तावित कर अगस्त्य ऋषि का नाम 'कुटज' सिद्ध करना हो व 'शिवालिक' का अर्थ 'शिव की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अलक' के रूप में स्पष्ट करना हो।

वहीं दूसरी तरफ आलोचक वर्ग यह भी मानता है कि 'कुटज' के माध्यम से आचार्य द्विवेदी अपने ही निराशा के दिनों का संप्रेषण कर रहे हैं-

" पहचानता हूँ उजाड़ के साथी, तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ"

और जो अदम्य जिजीविषा वे यहाँ सराहते हैं उसकी कमी वे अपने जीवन में महसूस कर रहे थे।

वहीं शब्द-शैली के प्रयोग से भी उनकी विभिन्न भाषाओं पर पकड़ लक्षित होती है यथा- अंग्रेजी का 'हाउस देयर इन अ नेम' हो या फिर फारसी, देशज का प्रयोग जो उनके पाण्डित्य को तो स्पष्ट करती है है, एक तरह से लालित्य का भी संप्रेषण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

द्रष्टव्य हो कि आचार्य द्विवेदी मुख्यतः ज्योतिषविद् व अध्यापक थे तथा ललित निबंध परंपरा के प्रस्तावक भी।

अतः स्पष्ट है कि पांडित्य व लालित्य का विलक्षण संयोग उनके निबंधों में पूर्णता के साथ दर्शित है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'संवत्सर' निबंध में निहित वैचारिकता का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय का रचनाकर्म मुख्यत: वैचारिकता का ही संप्रेषण है चाहे वह कविता हो, उपन्यास हो या फिर निबंध।

और विचारप्रधान निबंधों में भी संवत्सर का 'काल-चिंतन' ~~अद्वितीय~~ सर्वोत्कृष्टता का परिमाण है।

'संवत्सर' का मानवीकरण करते हुए अज्ञेय यहाँ 'ध्यान देने' और 'दृष्टिगत होने' का अंतर स्पष्ट करते हुए 'जैन बौद्धमत' ~~के~~ ~~फिर~~ व भारतीय परंपरा के निरंतरतावाद का ही संप्रेषण कर रहे हैं जहाँ सब कुछ नश्वर होते हुए भी निरंतर है, गतिशील है। एक वस्तु नष्ट होकर दूसरे के जन्म का आधार बन जाती है चाहे ओस की बूँद का भाव बनना हो या फिर शव-दाह की परंपरा हो।

अज्ञेय 'क्षणवाद' को प्रस्तावित करते हुए प्रत्येक क्षण का महत्व संश्लिष्टता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

में जीवन व सृष्टि को गतिमान बनाए रखने में बताते है। एक-एक क्षण ही संश्लिष्ट होकर संवत्सर बनता है।

पुनः अपनी वैचारिकता स्पष्ट करते हुए वे उस विचार का खण्डन करते है जहाँ प्रत्येक प्रश्न का उत्तर ढूँढना आवश्यक होता है। उनका मानना है कि कुछ प्रश्नों की सार्थकता उन तक पहुँच जाने मे ही है क्योंकि प्रश्न तक पहुँचना जिज्ञासा को जन्म देता है और जिज्ञासा ही सृष्टि व जीवन का आधार है।

संवत्सर में अज्ञेय काल की चक्रीय धारणा प्रस्तावित करते हुए काल चिंतन को साहित्य चिंतन व मानव चिंतन के समकक्ष खड़ा करते है।

समग्रतः उनकी वैचारिकता का एक पक्ष यहाँ पूर्णतः स्पष्ट हुआ है जो समग्र को स्पष्ट करने में एक महत्वपूर्ण 'अंग'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

की तरह है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) प्रेमचंद के निबंध 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द का निबंध 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' उनके द्वारा 'प्रगतिशील साहित्यिक संघ' के उद्घाटन में दिये गये भाषण का लिखित रूप है।

वे शुरुआत में साहित्यकार को मूलतः प्रगतिशील घोषित करते हैं और कहते हैं कि जो प्रगतिशील नहीं है वह साहित्यकार हो ही नहीं सकता।

पुनः वे प्रतिभा को जन्मजात तो मानते हैं परन्तु पश्चिम की परम्परा में अरस्तु के विचारों की तरह मानते हैं कि साहित्यकारों को मनोविज्ञान, इतिहास आदि के गहन अध्ययन पर ध्यान देना चाहिए वे प्रस्तावित करते हैं कि साहित्यकारों को अपने रूचि अनुसार विषयों का चुनाव कर उनमें उत्कृष्टता हासिल करनी चाहिए।

प्रगतिवादी व समाजवादी मूल्यों के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't w anything in thi

अनुसार प्रेमचन्द सौन्दर्य की अभिजात्यवादी धारणा बदले जाने पर बल देते हैं और रीतिकालीन परंपरा को नकारते हुए साधारण गरीब स्त्रियों के सौन्दर्य को भी साहित्य का विषय बनाने पर बल देते हैं।

वे साहित्यकारों के लिए उच्च मूल्यों की स्थापना करते हुए धनोपार्जन को साहित्य से भिन्न लक्ष्य बताते हैं और वे कहते हैं कि जिनका लक्ष्य धन अर्जित करना है उनके लिए साहित्य में कोई स्थान नहीं साहित्य न तो राजनीति के पीछे चलने वाला होना चाहिए और न ही रसिकों की संगोष्ठियों तक सीमित।

साहित्य को समाज को, राजनीति को राह दिखाता है और उसके आगे-आगे चलता है।

प्रेमचन्द साहित्य की भाषा पर भी चिन्तन करते हुए साधारण, जनग्राह्य भाषा की महत्ता स्थापित करते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार प्रेमचन्द आम-जन को साहित्य के केन्द्र में स्थापित करते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'चिन्तामणि' के निबंधों में प्रौढ़ चिन्तन, सूक्ष्म विश्लेषण और तर्कपूर्ण विवेचन का चरम आदर्श लक्षित होता है। विवेचन कीजिए। 15

चिन्तामणि का नाम ही मूलतः आचार्य शुक्ल के साहित्यिक आदर्शों का संप्रेषण है। स्पष्ट है कि वे चिन्तन को साहित्य का मूल स्वरूप मानते हैं। चिन्तामणि के निबंध इसी कड़ी का हिस्सा हैं।

चिन्तामणि के निबंधों में चिन्तन का प्रौढ़तम स्तर लक्षित होता है। आचार्य शुक्ल प्रस्तावित करते हैं कि अच्छे निबंध वे होते हैं जहाँ "एक-एक पैरा में विचार दबा-दबा कर कसे गये हों"

काव्यशास्त्रीय निबंधों को लें तो कविता क्या है में उनका मौलिक काव्य शास्त्रीय चिंतन स्पष्ट होता है वे रस के सामाजिक उद्देश्य लक्षित करते हैं, तथा कविता को प्रच्छन्नताओं के उद्घाटन का माध्यम बताते हैं वे काव्य को अध्यात्म से परे इहलौकिक उद्देश्यों की पूर्ति का साधन बता 'भावयोग' की संज्ञा देते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वहीं श्रद्धा-भक्ति जैसे मनोविकारपरक निबंध में भी वे प्रौढ़ चिन्तन के माध्यम से श्रद्धा जैसी भावनाओं के सामाजिक उद्देश्य तय करते हैं।

वे आगमनात्मक व निगमनात्मक शैली का प्रयोग करते हुए प्रत्येक सिद्धान्त का सूक्ष्म विश्लेषण करते हैं। प्रेम व श्रद्धा के अंतरों के संदर्भ में वे ~~विश्लेषण~~ प्रत्येक अंतर को ऐसे उधेड़ते हैं जैसे धागे के रेशे।

जहाँ प्रेम हेतु कोई बाह्यगुण की आवश्यकता नहीं वहीं श्रद्धा हेतु विशिष्ट गुण आवश्यक हैं। इसी प्रकार श्रद्धा के भेदों का विश्लेषण शील संबंधिनी, प्रतिभा संबंधिनी व साधन संबंधिनी श्रद्धा में करते हैं।

वहीं कविता क्या है में प्रत्येक काव्यांग का सूक्ष्म विश्लेषण दिखता है। चाहे वह अलंकार हो, बिंब हो या भाषा हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तर्कपूर्ण विवेचन उनके निबंधों का अहम भाग है वे प्रत्येक सिद्धान्त को अपने तर्कों से पुष्ट करते हैं चाहे वह रस को लोकमंगलवादी स्वरूप स्थापित करते हुए तुलसी के काव्य को महान बताना हो या फिर शील संबंधिनी श्रद्धा को श्रेष्ठ सिद्ध करना।

कहना न होगा, आचार्य शुक्ल के निबंध प्रौढ़ चिन्तन, सूक्ष्म विश्लेषण व तर्कपूर्ण विवेचन के परम आदर्श स्थापित करते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 15

'कविता क्या है' में आचार्य शुक्ल की काव्य दृष्टि स्पष्ट हुई है जिसके प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं।

(I) वे कविता को ज्ञान योग और कर्मयोग के समकक्ष 'भावयोग' की संज्ञा देकर लोकोत्तर आनन्द की प्राप्ति का माध्यम बताते हैं। वह आनन्द तब प्राप्त होता है जब 'व्यष्टि' का संलयन समष्टि में हो जाता है।

(II) रस की लोकमंगलवादी धारणा उनकी काव्य-दृष्टि का अद्वितीय अंग है जो मनुष्य व समाज को उनकी काव्य-दृष्टि में प्राथमिक उद्देश्य मानता है।

(III) वे कविता में अर्थग्रहण के साथ-साथ बिंब-ग्रहण को भी महत्वपूर्ण मानते हैं क्योंकि बिंब पाठक तक अनुभूति पहुँचाने में सहायक होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iv) वे अलंकारों को सौन्दर्य में वृद्धि का साधन तो मानते हैं, पर अलंकारों के माध्यम से सौन्दर्य की सृष्टि का निषेध करते हैं।

(v) वे भावप्रेरित वक्रता को स्वीकार कर बुद्धि-प्रेरित वक्रता का निषेध करते हैं।

vi) आचार्य शुक्ल कविता में प्रतीकवाद व रहस्यवाद का खण्डन कर स्पष्टता को महत्व देते हैं।

vii) वे मुक्तक पर प्रबंध काव्य व निर्गुण भक्ति पर सगुण भक्ति की श्रेष्ठता की स्थापना करते हैं।

इस प्रकार 'कविता क्या है' के माध्यम से आचार्य शुक्ल कविता के प्रतिमान निर्धारित करते हैं जो आज तक आलोचना के तत्व निर्धारित करते है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation